आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2018-20

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 6 अंक : 5 जनवरी-2019 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा

कुलपति सन्देश

पशु आहार एवं पोषण में स्थानीय वनस्पति का उपयोग है लाभकारी

प्रिय कृषक एवं पशुपालक भाई और बहिनों!

नव वर्ष का शुभ आगमन आपकी सुख, शान्ति और समृद्धि में अभिवृद्धि की मंगल–कामना के साथ मेरी हार्दिक शुभकामनाएं। वन तथा चारागाह क्षेत्र में पायी जाने वाली विभिन्न प्रकार की वनस्पतियां पशु के आहार में बहुत उपयोगी होती हैं। इनमें पोषक तत्वों की मात्रा बहुत अधिक होती है। ये वनस्पतियां मुख्यतः नीम, खेजड़ी, अरडू, कीकर, पीपल, बरगद, सीरस, जिन्जा, ककेड़ा पिलवन, शहतूत व बबूल हैं। शीत ऋतु में इन वृक्षों की पत्तियां बहुतायत में पाई जाती हैं और इन्हें काटकर सुखा लेना चाहिए तथा बाद में इनका उपयोग या तो चराई के पश्चात भेड़–बकरियों को 200 ग्राम तक प्रतिदिन की दर से देना चाहिए या इन पत्तियों को रातिब मिश्रण के साथ 40–50 प्रतिशत की दर से मिश्रण बनाकर उपयोग में लेना चाहिए। इस प्रकार से बनाए गए रातिब मिश्रण से पशुओं का भरण–पोषण भली प्रकार से होता है और साथ ही 60–70 ग्राम की दर से प्रतिदिन भार वृद्धि भी होती है। इस प्रकार की खिलाई से पशुओं की प्रजनन क्षमता में वृद्धि होती है यथा भेड़–बकरियों का प्रजनन के लिए तैयार होना, युग्म (जुड़वां) उत्पन्न होना तथा साथ ही जन्म भार वृद्धि में लाभदायक है। रातिब मिश्रण में 50 भाग फलियां/पाला/खेजड़ी/अरडू या नीम की पत्तियों का उपयोग किया जाता है, इसमें 22 भाग जौ/मक्का/बाजरा/ज्वार और 15 भाग मूंगफली/सरसों की खली तथा नवां भाग गेहूं/चावल की चोकर का होता है। 2.5 भाग शीरा, एक भाग खनिज लवण व 0.5 भाग नमक मिलाकर इसे तैयार किया जाता है। अकाल के समय में खाद्य पदार्थों के रूप में इन पेड़ की पत्तियों का प्रयोग पशु आहार के रूप में किया जा सकता है। खेजड़ी तथा बबूल की विभिन्न प्रजातियों की फलियों को सांगरी या पातड़ी के नाम से जाना जाता है। इन फलियों में प्रोटीन की मात्रा लगभग 30–50 प्रतिशत होती है। प्रोटीन पशुओं के लिए अत्यंत आवश्यक अवयव है। ये फलियां पेड़ों पर सूखने के बाद झड़ जाती हैं जिन्हें भेड़–बकरियां स्वयं खा लेती है किन्तु इस प्रकार की खिलाई से फलियों का सही उपयोग नहीं हो पाता है। अतः इन्हें एकत्रित कर विषम परिस्थितियों में काम में लिया जा सकता है। देश व राज्य के अन्य भागों में विलायती बबूल बहुतायत में पाया जाता है। इसकी वृद्धि बहुत ही तीव्रता से होती है। पेड़ पर लगने वाली फलियों में प्रोटीन की मात्रा 35 से 60 प्रतिशत तथा पर्याप्त मात्रा में शर्करा होती है। गर्मी शुरू होने से पहले जब ये फलियां पक जाती है और तेज हवा चलने पर नीचे गिरती हैं, जिन्हें पशु खा लेता है। इन फलियों की संरचना कुछ ऐसी होती है कि खाई हुई फलियों के मुख्य भाग बिना पचे ही मींगनी या मल में आते हैं जिससे पशु को पूर्ण लाभ नहीं होता है। इस अवस्था में इनके पूर्ण उपयोग के लिए आवश्यक है कि फलियों को पेड़ से गिरने से पहले एकत्रित कर पहले इसका उपचार किया जाए तथा 20–25 प्रतिशत तक रातिब मिश्रण में सम्मिलित किया जाए। अपने आस–पास की वनस्पति का सही उपयोग करके हम अपने पशुओं के पोषण और आहार जरूरतों की लागत को कम कर पाने में सफल हो सकते हैं।

जय हिन्द!

(प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा)

कुलपति प्रो. शर्मा को स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति का अतिरिक्त प्रभार

राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्री कल्याणसिंह के निर्देशानुशार 19 दिसम्बर को राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा को स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति पद का अतिरिक्त प्रभार सौंपा गया है। एस.के.आर.ए.यू. के निवर्तमान कुलपति प्रो. बी.आर. छीपा का कार्यकाल समाप्त हो जाने के बाद अपरान्ह पश्चात् प्रो. विष्णु शर्मा ने स्वामी केशवानंद कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति का अतिरिक्त प्रभार ग्रहण कर लिया। कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा पशुपोषण के प्रोफेसर–वैज्ञानिक हैं और अगस्त 2018 से राजुवास के कुलपति पद पर कार्यरत है। उनकों अतिरिक्त कार्यभार मिलने से पशुपालन और कृषि क्षेत्र में उनके अनुभवों का लाभ मिल सकेगा। प्रो. शर्मा के कार्यभार ग्रहण करने पर दोनों ही विश्वविद्यालयों में खुशी का इजहार किया गया।

पशुपालक व कृषक भाईयों एवं पशुपालन नए आयाम के सभी पाठकों को
नव वर्ष तथा गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।
–महात्मा गांधी

मुख्य समाचार

वेटरनरी विश्वविद्यालय के कैटल फीड प्लांट में पौष्टिक व सस्ते पशु आहार का उत्पादन शुरू

वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशुधन अनुसंधान केन्द्र बीछवाल स्थित कैटल फीड प्लांट में संतुलित और पौष्टिक पशु आहार तैयार किया गया है। यह पशु आहार राजुवास के अनुसंधान निदेशक प्रो. आर.के सिंह के निर्देशन में पशुपोषण विभाग के डॉ. दिनेश जैन द्वारा सुझाए पशु आहार संरचना के आधार पर बनाया गया है। पशुधन अनुसंधान केन्द्र के प्रभारी अधिकारी डॉ. नरेन्द्र सिंह राठौड़ ने बताया कि प्लांट में परीक्षण के तौर पर 20 क्विंटल पशु आहार प्रति दिन तक का निर्माण शुरू किया गया है। इस आहार में डाई–कैल्शियम फॉस्फेट, डी–ऑयल्ड राईस ब्रान, सोया चूरी, मक्का और गेहूं चापड़ सहित 12 विभिन्न खाद्य पदार्थों का मिश्रण शामिल है। तैयार किया गया पशु आहार उत्तम पौष्टिक गुणवत्ता के साथ–साथ बाजार भाव से सस्ता भी है। प्रारंभ में इस कैटल फीड का उपयोग थारपारकर नस्ल की गायों में दुग्ध उत्पादन बढ़ाने के लिए किया जाएगा। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा द्वारा विश्वविद्यालय के सभी पशुधन अनुसंधान केन्द्रों पर उत्पादन की लागत में कमी करने व पशुओं को पौष्टिक व संतुलित पशु आहार उपलब्ध करवाने के लिए यह प्रयास शुरू किया गया है। यह प्रयास विश्वविद्यालय के सभी फार्मो पर लागू किया जाएगा। कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने इस कार्य को सम्पादित करने वाले सभी प्रध्यापकों की सराहना की है।

विश्वविद्यालय की विधियों–नियमों को प्रबंधन मंडल की स्वीकृति, राज्य सरकार की मंजूरी उपरान्त रिक्त पदों पर भर्ती प्रक्रिया होगी शुरू : कुलपति प्रो. शर्मा

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रबंध मंडल की 20वीं बैठक 18 दिसम्बर को कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा की अध्यक्षता में आयोजित की गई। कुलपति सचिवालय में आयोजित बैठक में कुलपति प्रो. शर्मा ने प्रबंध मंडल के सदस्यों के समक्ष वर्ष 2010 में स्थापित राजुवास की गत 8 वर्षों का प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए कहा कि अल्प काल में ही विश्वविद्यालय ने शैक्षणिक, अनुसंधान और प्रसार गतिविधियों में चहुंमुखी विकास के साथ देश के अग्रणीय विश्वविद्यालयों में अपना एक विशिष्ट स्थान बनाने में सफलता अर्जित की है। वेटरनरी विश्वविद्यालय का कार्य क्षेत्र पूरा राजस्थान प्रांत है जिसके 22 जिलों में विश्वविद्यालय ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई है। तीन महाविद्यालयों में उच्च शिक्षण कार्य, 8 पशुधन अनुसंधान केन्द्र और 13 पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों के माध्यम से पशुचिकित्सा शिक्षा और पशुपालक व कृषक समुदाय को सेवाएं प्रदान की जा रही है। जिलों में स्थित वी.यू.टी. आर.सी. को पशुपालन विभाग से समन्वय करके अधिक प्रभावी बनाया जाएगा। पशुधन अनुसंधान केन्द्रों पर उत्पादक और उन्नत नस्ल के ही पशुओं को रखे जाने बाबत हिदायत दी गई है। कुलपति प्रो. शर्मा ने कहा कि विश्वविद्यालय प्रशासन ने गत 4 माह की अवधि में राजुवास एक्ट–2010 के तहत विधियों व परिनियमों को तैयार किया है जिनको अब राज्य सरकार की अनुमति के लिए भेजा जाएगा। इससे अब शैक्षणिक और गैर–शैक्षणिक रिक्त पदों पर शीघ्र ही भर्ती की प्रक्रिया शुरू की जा सकेगी। प्रबन्ध मण्डल की बैठक में राजुवास एक्ट–2010 के तहत बनाये गये विधियों, नियमों–परिनियमों का अनुमोदन किया गया। कुलपति ने बताया कि राजुवास ने गुणवत्तायुक्त पशुचिकित्सा शिक्षा और उद्यमिता

विकास के लिए राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना के तहत करीब 30 करोड़ रूपये राशि की परियोजना के प्रस्ताव स्वीकृति के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् को भिजवाए गए हैं। बैठक में गत प्रबन्धन बैठक की कार्यवाही रिपोर्ट का भी अनुमोदन किया गया। बैठक में प्रो. ए.के. मिश्रा, पूर्व कुलपति, पंत कृषि विश्वविद्यालय, प्रो. कमल जायसवाल, (लखनऊ), श्री सुरेश चन्द्र गुर्जर, श्री पंकज राज मीणा, श्रीमति मंजू दीक्षित एवं डॉ. ए.पी. व्यास ने सदस्य के तौर पर शिरकत की। पशुपालन विभाग के अतिरिक्त निदेशक डॉ. रणजीत सिंह, उरमूल डेयरी के डॉ. मनोहर लाल जैन, अनुसंधान निदेशक प्रो. आर.के. सिंह, डीन प्रो. त्रिभुवन शर्मा और कुलपति के विशेषाधिकारी डॉ. गोविन्द सिंह भी बैठक में मौजूद थे। कुलसचिव प्रो. हेमन्त दाधीच ने प्रबन्ध मण्डल की बैठक का संचालन किया।

पशुपालन एवं कृषि मंत्री कटारिया ने किया वेटरनरी विश्वविद्यालय के 'पशुपालक कैलेण्डर–2019' का लोकार्पण

कृषि एवं पशुपालन मंत्री श्री लालचंद कटारिया ने रविवार को वेटरनरी विश्वविद्यालय के जनसम्पर्क प्रकोष्ठ द्वारा तैयार "राजुवास कैलेण्डर–2019" का लोकार्पण किया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने पशुपालन मंत्री महोदय को वेटरनरी विश्वविद्यालय की शैक्षणिक, अनुसंधान एवं शिक्षा प्रसार गतिविधियों की जानकारी देते हुए बताया कि पशुपालकों को तकनीकी जानकारी का बहुरंगी राजुवास कैलेण्डर प्रति वर्ष जारी किया जाता है। इस अवसर पर पशुपालन एवं कृषि मंत्री श्री कटारिया ने राज्य के पशुपालकों के चहुंमुखी उत्थान और कल्याणकारी कार्यक्रमों को पूरी शिद्दत के साथ लागू किए जाने का आह्वान किया। राजुवास जनसम्पर्क प्रकोष्ठ के समन्वयक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि राजुवास कैलेण्डर में पशुपालकों के लिए मासिक निर्देशिका का प्रकाशन किया गया है जिसमें पशुपालकों के लिए उस माह में वैज्ञानिक हिदायतों और किए जाने वाले पशुपालन संबंधी कार्यों का विवरण शामिल है। इस कैलेण्डर में राजुवास की समस्त

गतिविधियों और कार्यक्रमों का दिग्दर्शन भी किया जा सकता है। जयपुर में लोकार्पण के अवसर पर सामान्य प्रशासन विभाग के शासन सचिव डॉ राजेश शर्मा और पूर्व पशुपालन निदेशक डॉ. राजेश मान भी उपस्थित थे।

राजुवास के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा को नेशनल एकेडमी ऑफ वेटरनरी साईंसेज का फैलो सम्मान

नेशनल एकेडमी ऑफ वेटरनरी साईंसेज (इण्डिया) द्वारा वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा को एकेडेमी की "फैलो" अर्वाड प्रदान किया गया है। उड़ीसा कृषि एवं तकनीक विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर में 19–20 दिसम्बर 2018 को आयोजित एक राष्ट्रीय सेमीनार में इसकी घोषणा की गई। प्रो. विष्णु शर्मा पशुपोषण विज्ञान के प्रोफेसर और वैज्ञानिक हैं और वर्तमान में राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशुविज्ञान विश्वविद्यालय के कुलपति हैं। उन्होंने स्नाकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान जयपुर के डीन के रूप में देश में उच्च पशु चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में अपना महत्ती योगदान किया और कई देशों की यात्राएं की। उन्होंने हाल ही में भारत सरकार की ओर से टोकियो (जापान) में आयोजित वर्ल्ड ऑर्गेनाइजेशन फॉर एनीमल हैल्थ द्वारा आयोजित अर्न्तराष्ट्रीय कार्यशाला में देश का प्रतिनिधित्व किया है। कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा के एकेडमी "फैलो" के रूप में राज्य में पशुचिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में नए आयामों को गति मिल सकेगी।

सी.वी.ए.एस., नवानियाँ में दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन सम्पन्न

वेटरनरी कॉलेज नवानियां, वल्लभनगर, उदयपुर में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक सम्मेलन के अंतिम दिन 14 दिसम्बर को पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा ने सम्मेलन के प्रतिभागियों, संकाय सदस्यों तथा छात्र–छात्राओं के समक्ष **"जैविक पशुपालन"** विषय पर अपना मुख्य व्याख्यान प्रस्तुत किया। देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं अनुसंधान संस्थानों से आए वैज्ञानिकों ने 'मुर्गीपालन द्वारा कृषकों की आय में वृद्वि के विभिन्न आयामों पर' शोध पत्र वाचन तथा पोस्टर प्रस्तुत किये गए। कुलपति प्रो. (डॉ.) शर्मा ने वैज्ञानिक समुदाय का आव्हान किया कि जैविक पशुपालन आज की महत्वपूर्ण आवश्यकता है, हमारे वैज्ञानिकों को पूर्णनिष्ठा एवं लगन से पशुपालन की जैविक क्रियाओं के प्रमाणीकरण हेतु प्रयास करने चाहिये। समापन समारोह के मुख्य अतिथि प्रो. (डॉ.) नरेन्द्र सिंह राठौड़, उप महानिदेशक (शिक्षा), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली ने अपने उद्बोधन में बताया कि कृषि तथा पशुपालन में आपसी गहरा सह–संबंध है, सन् 2022 तक किसानों की आय को दोगुना करने का लक्ष्य दोनों इकाईयों के समन्वित प्रयास से ही संभव होगा। उन्होंने देश के कृषि विकास में महिला शिक्षा पर जोर देते हुए बताया कि महिलाओं को कृषि एवं पशुपालन के क्षेत्र में अधिक से अधिक अवसर प्रदान किये जाने चाहिए। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि एवं पूर्व अधिष्ठाता प्रो. जीत सिंह ने कृषि एवं दुग्ध उत्पादों में कीटनाशकों व प्रतिजैविकों के अवशेषों के दुष्प्रभावों पर अपनी चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि इन दुष्प्रभावों को कम करने के लिए नये अनुसंधानों की आवश्यकता है। विशिष्ट अतिथि प्रो. (डॉ.) संजीता शर्मा ने कहा कि युवा वैज्ञानिकों का इस सम्मेलन में बड़ी संख्या में भाग लेना प्रंशसनीय है।

बम्बलू में पशुपालकों को उन्नत पशुपोषण तकनीक का प्रशिक्षण

वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशुधन चारा संसाधन प्रबन्धन एवं तकनीक केन्द्र द्वारा बीकानेर के बम्बलू ग्राम में 14 दिसम्बर को एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। केन्द्र के प्रमुख अन्वेषक डॉ. दिनेश जैन ने बताया कि उन्नत पशुपोषण एवं हरा चारा उत्पादन विषय पर आयोजित प्रशिक्षण में 46 किसान व पशुपालकों ने भाग लिया। उन्होंने बताया कि पशुओं से अधिक उत्पादन लेने के लिए उसके खान–पान का उचित प्रबन्धन जरूरी है। पशु आहार में हरा चारा महत्वपूर्ण है, अतः किसान भाइयों को वर्ष भर चारे की उपलब्धता बनाए रखने लिये हरे चारे के उत्पादन के साथ ही इसको साइलेज बना कर संरक्षित करना चाहिए। प्रशिक्षण शिविर में केन्द्र के विशेषज्ञ श्री दिनेश आचार्य एवं श्री महेन्द्र सिंह मनोहर ने हरा चारा उत्पादन, अजोला उत्पादन तकनीक, हरे चारे के संरक्षण की सायलो बैग तकनीक तथा यूरिया मोलासिस मिनरल ब्लॉक तकनीक के बारे में पशुपालकों को विस्तार पूर्वक जानकारी दी।

राजुवास द्वारा डाइयां गांव के स्वास्थ्य शिविर में 80 ग्रामीण हुए लाभान्वित

राज्यपाल के निर्देशानुसार "स्मार्ट विलेज इनिशिएटिव" अंतर्गत गोद लिए डाईयां गांव में वेटरनरी विश्वविद्यालय और जिला चिकित्सा, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग द्वारा 19 दिसम्बर को एक दिवसीय निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। "स्मार्ट विलेज इनिशिएटिव" के नॉडल अधिकारी डॉ. नीरज कुमार शर्मा ने बताया कि शिविर में 80 ग्रामीणों की स्वास्थ्य जांच, मौसमी बीमारियों का उचित उपचार एवं दवाईयों का निःशुल्क वितरण किया गया। शिविर में जिला चिकित्सा, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग के डॉ. दिनेश मूंधड़ा ने अपनी सेवाएं प्रदान की। उन्होंने रक्त दाब और रक्त शर्करा की जांच का कार्य किया। चिकित्सक दल ने महिलाओं को आयरन की गोलियां वितरित कर बच्चों में टीकाकरण किया गया।

प्री-रबी सम्मेलन-2018
राजुवास प्रदर्शनी स्टॉल को मिला प्रथम पुरस्कार

कृषि विज्ञान केन्द्र, ग्रामोत्थान विद्यापीठ, संगरिया द्वारा आयोजित प्री–रबी सम्मेलन–2018 के तहत 20 दिसम्बर को मेले का आयोजन किया गया जिसमें वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ द्वारा एक प्रदर्शनी स्टॉल लगायी गई। जिसमें स्वदेशी गायों के रंगीन मॉडल और अजोला घास, साइलेज बेग, खनिज लवण मिश्रण आदि प्रदर्शित किये गये। इस सम्मेलन में केन्द्र के प्रभारी डॉ राजकुमार बेरवाल द्वारा सफल व्यवसायिक पशुपालन कर आय को दुगना कैसे करें, विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। सम्मेलन में 500 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया। इस मेले में लगभग 50 प्रदर्शनी स्टॉल विभिन्न विभागों व कंपनी द्वारा लगायी गयी। इस प्रदर्शनी स्टॉल प्रतियोगिता में राजुवास प्रदर्शनी को प्रथम स्थान प्राप्त करने पर हनुमानगढ़ के जिला कलेक्टर श्री दिनेश चन्द्र जैन द्वारा प्रशस्ति–पत्र देकर सम्मानित किया गया।

प्रशिक्षण समाचार

वीयूटीआरसी, चूरू द्वारा 178 महिला पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 5, 10, 12, 14, 15, 19, 20 एवं 21 दिसम्बर को गांव पुनूसर, देपालसर, मेहरासर उपाथियान, देवासर, घड़सीसर, खींवासर, रावली की ढाणी एवं शिवरान की ढाणी गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 178 महिला पशुपालकों सहित कुल 275 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) केन्द्र द्वारा 238 पशुपालक प्रशिक्षित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) द्वारा 12, 13, 15, 17, 18 एवं 24 दिसम्बर को गांव कोनी, बनवाली, फतुही, अमरपुरा, 2 एलएम एवं सिंधुवाला गांवों में तथा 10 दिसम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 238 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सिरोही केन्द्र द्वारा 300 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही द्वारा 10, 14, 15, 17, 18, 19, 21 एवं 22 दिसम्बर को ग्राम पादर, मालेरा, मीन, मेथिपुरा, तलेटी, चुली, घरट एवं चोटिला गांवो में तथा 13 दिसम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 300 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, बाकलिया (नागौर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया–लाड़नू द्वारा 8, 12, 14, 15 एवं 17 दिसम्बर को गांव मिंदासरी, करकेडी, सबलपुरा, चांवडीया एवं सुरतपुरा गांवों में तथा दिनांक 20 दिसम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 08 महिला पशुपालकों सहित 177 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

अजमेर केन्द्र द्वारा पशुपालकों का प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, अजमेर द्वारा 14, 17, 18, 19, 20, 23 एवं 26 दिसम्बर को गांव नाईखेडा, जसवन्तपुरा, दिलवाडा, चैनपुरा, गुढ़ा, बादंरसीन्दरी एवं सोलकलां गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 92 महिला पशुपालाकों सहित कुल 223 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, डूंगरपुर द्वारा प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 11, 12, 14, 15 एवं 17 दिसम्बर को गांव ककलई, साबली फलां, खाखरियां, इंदरखेत एवं सामीतेड गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 113 महिला पशुपालकों सहित कुल 152 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कुम्हेर (भरतपुर) केन्द्र द्वारा पशुपालकों का प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 11, 12, 13, 14, 18, 19, 20 एवं 22 दिसम्बर को गांव बगधारी, करमुकी, नगला मैंथना, जस्वर, डोमराकी, दईवराहना, भण्डारी एवं महलपुर–चूरा गांवों में तथा दिनांक 17 दिसम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 19 महिला पशुपालकों सहित कुल 133 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

टोंक जिले में पशुपालकों का प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, टोंक द्वारा 15, 17, 18, 19, 20, 21, 22 एवं 24 दिसम्बर को गांव लहन, चूली, हरभगतपुरा, धोली, चान्दसेन, पराना, देवली भांची एवं नटवाड़ा गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 254 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

लूनकरणसर केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 5, 6, 17, 20 एवं 21 दिसम्बर को गांव रासीसर पुरोहितान, कानासर, रासीसर, बदरासर एवं शोभासर गांवों में तथा दिनांक 18 दिसम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 184 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, कोटा द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कोटा द्वारा 12, 13, 14, 15, 17, 18, 20 एवं 21 दिसम्बर को गांव चनावटा, मान्डल्या हैडी, सिंगपुरा, कादिहैडा, कुरारीया कलां, खैरली कोदा, खेरली माहराजा एवं रैलगांव गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 251 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

बोजुन्दा (चितौड़गढ़) केन्द्र द्वारा 334 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा (चितौड़गढ) द्वारा 12, 13, 15, 17, 19, 20, 21 एवं 22 दिसम्बर को गांव ओरड़ी, खेरी, मायरा, बामनिया, फाचर सोलंकी, कूथना, नवाबपुरा एवं मूरलिया गांवो में तथा दिनांक 14 एवं 18 दिसम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 334 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, धौलपुर द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 14, 15, 17, 18, 19, 20, 21 एवं 24 दिसम्बर को गांव माकरा, धीमरी, कूकरा माकरा, मसूदपुर, रामनगर, धौंसपुर, मिलकन एवं पवेसुर गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 365 पशुपालकों ने भाग लिया।

जोधपुर केन्द्र द्वारा पशुपालकों का प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, जोधपुर द्वारा 17, 19, 20, 21, 22 एवं 24 दिसम्बर को गांव रामनगर, रामपुरा भाटिया, चौपासनी चारण, सिंधियों की ढाणी, कोटड़ा एवं मथानिया गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 185 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर द्वारा प्रशिक्षण

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर द्वारा 12 एवं 17 दिसम्बर गसंव फेफाना एवं मलवानी में तथा 5 एवं 18–22 दिसम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय एवं पांच दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 132 कृषक–पशुपालकों ने भाग लिया।

आईसीटी क्रांति द्वारा पशुपालन में नवीन संभावनाएं

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) ने दुनिया को एक सूत्र में जोड़ दिया जो हमारी जीवनशैली को लगातार बदल रहा है। आईसीटी तकनीकी उपकरण और संसाधनों का एक विविध सैट है, जिसमें सूचना का निर्माण, भंडारण, पुनः प्राप्ति, रूपांतरण और संचरण शामिल है। आज मानव जीवन आईटी क्षेत्र से अछूता नहीं है। आईसीटी क्रांति के इस दौर में कृषि और पशुपालन भी प्रभावित हुआ है, हालांकि कृषि और पशुपालन में आईटी की भागीदारी बेहद कम या नगण्य है। जिसकी वजह से वर्तमान परिदृश्य में भारत जैसे कृषि प्रधान देश में कृषि एवं पशुपालन भोजन और पोषण की सुरक्षा सुनिश्चित करता है और दूसरी ओर आय और रोजगार के अवसर प्रदान करता है, ऐसे में विकास की गति तुलनात्मक कम दर्ज की जा सकती है। इन दिनों जनसंख्या वृद्धि, अधिक शहरीकरण और बढ़ती आय के कारण पशुओं के उत्पादों की मांग तेजी से बढ़ रही है, उक्त मांग की उपलब्धता सुनिश्चित करने में आईसीटी सहायक सिद्ध हो सकती है। सूचना की उपलब्धता विस्तार की प्रक्रिया में सहायता करती है और इसे तेज़ और अधिक प्रभावी बनाती है। पशुपालकों को सही समय पर, सही तरीके से जानकारी और ज्ञान की उपलब्धता अधिक उत्पादकता और अधिक लाभप्रदता की ओर ले जाती है। इस प्रकार, आईसीटी उपकरणों का उपयोग भारत में पशुपालन के क्षेत्र को बदलने की क्षमता रखते हैं। पशुपालन क्षेत्र को सूचना संचालित, आधुनिक और प्रतिस्पर्धी क्षेत्र में बदलने के लिए, आईसीटी की भूमिका को खारिज नहीं किया जा सकता है। इसीलिए आईसीटी उपकरण आज के समय की मांग हैं।

आईसीटी के उपयोग

पशुपालन के क्षेत्र में आईसीटी आधारित सूचना वितरण द्वारा पशुपालक के गुणवत्तापूर्ण निर्णय लेने की समझ एवं ज्ञान में काफी सुधार किया जा सकता है। इसके अलावा आईसीटी मौसम पूर्वानुमान, सर्वोत्तम उत्पादन प्रथाओं, आवास में नवाचार, पशुधन रोग नियंत्रण, प्रजातियों/नस्ल के विवरण, डेयरी झुंड प्रबंधन, टीकाकरण, पशुधन उत्पादन और पशुधन उत्पादों के विपणन इत्यादि के बारे में जानकारी का आदान–प्रदान करता है।

पशुपालन के विभिन्न क्षेत्र जहां वर्तमान में आईसीटी उपकरण उपयोग लिए जा रहे हैं:–

1. पशु प्रजनन
2. पशु प्रबंधन
3. पशु चारा प्रबंधन
4. पशु स्वास्थ्य देखभाल
5. विकास कार्यक्रम
6. परियोजना प्रस्ताव लेखन
7. विपणन
8. प्रशासन
9. सूचना प्रसार
10. आपदा प्रबंधन
11. योजना
12. पशुपालन में कोई अन्य क्षेत्र

आईसीटी के लाभ

1. धन और समय की बचत : वैज्ञानिक संदेश, नवीन तकनीक एवं आवश्यक सूचनाएं तुरंत इच्छुक उपयोगकर्ताओं तक पहुंचाने के लिए धन और समय की बचत करता हैं।

2. निरंतर/अनवरत उपलब्धता : साइबर एक्सटेंशन की मुख्य विशेषता इसकी उपलब्धता हर समय (24x7) होती है। इसे किसी भी समय उपयोगकर्ताओं द्वारा उनकी ज़रूरतों के अनुसार कभी भी, कहीं भी देखा जा सकता है।

3. प्रसार प्रक्रिया में अल्प चरण : साइबर पहुँच पारंपरिक विस्तार प्रक्रिया से कई चरणों को हटा देगा। सूचना सीधे इंटरनेट पर डाली जा सकती है, जो जिला, सब–डिवीजन, ब्लॉक और ग्राम स्तर पर विस्तार कार्यकर्ताओं और पशुपालकों के लिए उपलब्ध होगी। सभी संबंधित सूचना तुरंत प्राप्त करेंगे और प्रश्न/स्पष्टीकरण/सुधार को भी उतना ही तेजी से लागू किया जा सकता है।

4. समृद्ध एवं विश्लेषणात्मक सूचना की प्राप्ति : पशुपालकों को उनकी आवश्यक जानकारी खोजने और ढूंढने की सहूलियत प्रदान करता है।

5. तत्काल अंतर्राष्ट्रीय पहुंच : आईसीटी समय और दूरी की बाधा को खत्म कर देगी, जो दुनिया के किसी भी हिस्से से किसी विशेष पशुधन समस्या पर नवीनतम जानकारी जानने और सर्वोत्तम वैज्ञानिक/विशेषज्ञ के साथ चर्चा में महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकती है।

वर्तमान में, पशुधन प्रबंधन के लिए उभरती प्रासंगिक आईसीटी तकनीक पर जोर दिया जा रहा है। हालांकि वित्तीय संसाधन आईसीटी उपकरणों के प्रसारण को सीमित कर सकते हैं, आईसीटी प्रणालियों को मजबूत करने से सूचना प्रवाह/संचरण और सहयोग में काफी हद तक सुधार होगा। इसलिए, पशुपालकों को अधिक सशक्त बनाने का एकमात्र विकल्प आईसीटी उपकरण का कम लागत पर उपयोग सूचना प्राप्त करने में मौजूद बाधाओं को दूर करने में मदद कर सकता है और अनुप्रयोगों को व्यवहार्य और लाभदायक बना सकता है।

डॉ सुनील राजोरिया, डॉ राजेश सिंगाठिया, डॉ विरेन्द्र सिंह
वी.यू.टी.आर.सी.,डूंगरपुर मो. : 9660670669

मुर्गियों में कोल्ड स्ट्रैस का प्रबंधन

इस समय उत्तरी भारत के पहाड़ी इलाकों में बहुत ज्यादा हिमपात होने की वजह से राज्य के अधिकांश क्षेत्रों में वातावरण का तापमान सामान्य से कम चल रहा है और कुछ स्थानों पर तो शून्य से नीचे है। वातावरण का अचानक अत्याधिक तापमान गिरने से मुर्गियां बहुत अधिक प्रभावित होती हैं और इस प्रभाव की वजह से उत्पादन में अप्रत्याशित कमी आती है एवं कई बार मुर्गियों की मृत्यु भी हो जाती है। इस अवस्था को कोल्ड स्ट्रैस या हाइपोथर्मिया कहते हैं। यदि इस मौसम के दौरान मुर्गियों का समुचित प्रबंध नहीं किया जाता है तो कम उत्पादन और मृत्यु से मुर्गीपालक को काफी आर्थिक हानि उठानी पड़ती है।

कोल्ड स्ट्रैस अथवा हाइपोथर्मिया को मुर्गीपालक आसानी से पहचान सकते हैं। रात के समय मुर्गियां स्वस्थ होती हैं और प्रातः मुर्गिया मरी हुई मिलती है। कमजोर चूजे कोल्ड स्ट्रैस से ज्यादा प्रभावित होते हैं। कोल्ड स्ट्रैस की वजह से मुर्गियां घर के एक कोने में इकट्ठा हो जाती हैं, सुस्त हो जाती हैं, शरीर के पंख खड़े हो जाते हैं। प्रारंभ में मुर्गी कांपने लगती है, श्लेष्मा झिल्लियां पीली लगती हैं और श्वास दर में कमी आती है तथा कुछ ही समय में मुर्गी की मृत्यु हो जाती है। मुर्गीपालकों को चाहिये कि अत्याधिक सर्दी के समय मुर्गियों का प्रबंधन अच्छी तरह करें। रात के समय मुर्गियों को मुर्गीघर में रखें। दरवाजे एवं खिड़कियों पर टाट की पल्लियां लगा दें ताकि सीधी सर्द हवाओं से मुर्गियों का बचाव हो सके। साथ ही मुर्गीपालक यह ध्यान रखें कि सर्दी से बचाव के लिये घर के अन्दर आग न जलायें एवं धुआं न करें। धुएं के कारण घुटन व न्यूमोनिया होने से मृत्यु का खतरा बढ़ जाता है। मुर्गियों को संतुलित आहार एवं उचित मात्रा में विटामिन्स दें। चूजों के लिए मुर्गीघर में हीटर अथवा ज्यादा वाट के बल्ब लगाने से तापमान को नियंत्रित किया जा सकता है। यदि मुर्गियों में कोल्ड स्ट्रैस के लक्षण देखें तो तामान नियंत्रित कर पशु चिकित्सक से तुरन्त सम्पर्क करें और मुर्गियों की जान बचायें।

– प्रो. ए. के. कटारिया
प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

ए 1/ ए 2 दूध का वैज्ञानिक विश्लेषण एवं संभावनाएं

वर्तमान में भारत का दुग्ध उत्पादन 163 मिलियन टन के साथ प्रथम स्थान पर है एवं राजस्थान का दुग्ध उत्पादन 12 प्रतिशत योगदान के साथ द्वितीय स्थान पर है। भारतीय संस्कृति में गाय को कामधेनू कहा गया है। स्वास्थ्य दृष्टिकोण से गाय का दूध फायदेमंद तो है ही, वैज्ञानिकों ने दावा किया है कि गाय के दूध में पाया जाने वाला प्रोटीन हृदय की बीमारी, मधुमेह से लड़ने में कारगर और मानसिक विकास में सहायक होता है। पिछले कुछ वर्षों से वैज्ञानिकों एवं उपभोक्ताओं के बीच ए 1 एवं ए 2 दूध चर्चा का विषय बना हुआ है। वैज्ञानिकों के बीच विरोधाभास भी है क्योंकि बहुत अधिक अनुसंधान नहीं हुए हैं। देसी नस्ल की गाय में क्या खूबियां होती हैं जिससे उसके दूध को इतना महत्व दिया जा रहा है।

वैज्ञानिकों के शोध में पाया गया है कि ए 2 टाइप दूध, ए 1 टाइप दूध से कई गुणा ज्यादा स्वास्थ्यवर्द्धक है। देसी नस्ल की गायों में ए 2 टाइप दूध प्रोटीन प्राकृतिक रूप से पाया जाता है। ये कई बीमारियों जैसे कि हृदय रोग, डायबिटीज एवं न्यूरोलॉजीकल डिसऑर्डर से बचाता है एवं शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता पैदा करता है। सबसे पहले यह अनुसंधान न्यूज़ीलैंड के वैज्ञानिकों ने किया। विदेशी गाय का दूध मनुष्य में कई घातक रोग पैदा करता है, इस थीम को लेकर वैज्ञानिक डा. कीथ वुडफोर्ड ने विश्व प्रसिद्ध पुस्तक डेविल इन द मिल्क इलनेस, हेल्थ एंड पॉलिटिक्स ए 1 एंड ए 2 मिल्क" लिखी है, इस पुस्तक में उल्लेखित है कि ए 1 मिल्क मानव समाज के लिए विष तुल्य है। इस शोध के अनुसार विदेशी गायों का दूध मानव शरीर में वीटा केशोमोर्फीन –7 (बीसीएम–7) नामक विषाक्त तत्व छोड़ता है। इसके कारण मधुमेह, धमनियों में खून जमना, दिल का दौरा, बचपन में अकाल मृत्यु ऑटिज्म और शिजोफ्रेनिया जैसी घातक बीमारियां होती हैं। डा़ वुडफोर्ड और कई अन्य वैज्ञानिकों ने विदेशी और देशी गाय के दूध में बहुत बड़ा अंतर सिद्ध किया है। विदेशी गाय में ए 1 और देशी गाय में ए 2 नाम का कैसीन मिलता है। आस्ट्रेलिया जैसे कई देशों में ए 2 दूध (देशी गाय का दूध) की कीमत ए 1 से काफी अधिक है।

ए 1 और ए 2 नस्ल की गाय में अनुसंधान से पता चला है कि ए 1 और ए 2 के आनुवांशिक रूपों बीटा कैसीन में अंतर पाया गया। दोनों दूध में केवल एक एमिनो एसिड का ही अंतर होता है। यह अंतर ही दूध में एक तरह से औषधि का काम करता है। देश–विदेश में हुए विभिन्न शोधों से यह सामने आया है कि देसी गाय का ए 2 दूध कई रोगों का रामबाण इलाज है। गाय के दूध में पायी जाने वाले एमिनोएसिड में 67 वें स्थान पर प्रोलीन पाया जाता है और इसोलयूसिने एमिनोएसिड से प्रबल रूप से जुड़ा रहता है, परंतु जब प्रोलीन के स्थान पर हिस्टीडीन आ जाता है तो हिस्टीडीन में इसोलयूसिने से जुड़े रहने की प्रबल इच्छा नहीं रहती है। एमिनो एसिड हिस्टीडीन मानव शरीर की पाचन क्रिया में टूट जाता है और 7 एमिनो एसिड का प्रोटीन (बी.सी.एम–7) बनाता है जिसे बीटा केशोमोरफिन –7 कहा गया है। बी.सी.एम–7 एक अफीम परिवार का मादक तत्त्व है जो बहुत शक्तिशाली ऑक्सीकरण एजेंट के रूप में मानव स्वास्थ्य पर दूरगामी दुष्प्रभाव छोड़ता है। जिस दूध में यह विषैला बी.सी.म–7 पाया जाता है उसे ए 1 दूध कहते हैं। विषैला बी.सी.एम–7 को कई जान लेवा रोगों का कारण पाया गया है। विदेशी गाय के डीएनए में 67 स्थान पर प्रोलीन न होकर हिस्टीडीन पाया जाता है।

न्यूजीलैंड में डेरी उद्योग में परीक्षण किया गया तो बहुत सारा दूध ए 1 पाया गया। जीव विज्ञान के अनुसार भारतीय गायों के डीएनए में 67 पद पर स्थित एमिनो एसिड प्रोलीन पाया जाता है। इन गायों के ठंडे यूरोपीय देशों को पलायन में भारतीय गाय के डीएनए में प्रोलीन एमीनोएसिड हिस्टीडीन के साथ उत्परिवर्तित हो गया, इस प्रक्रिया को वैज्ञानिक भाषा में म्यूटेशन कहते हैं। जिस दूध में यह विषैला मादक तत्व बीसीएम 7 पाया जाता है उस दूध को वैज्ञानिकों ने ए 1 दूध का नाम दिया है।

ए 1 गाय का दूध शरीर में टूट कर बायोएक्टिव ओपिओइड पेप्टाइड बीटा केसोमोर्फिन –7(बी. सी. एम.–7) है। हमारे रक्त प्रवाह में, यह ओपिओड ऑक्सीडीजेड कोलेस्ट्रॉल एक उच्च दर से पैदा करता है, जो हृदय रोग के लिए एक कारण हो सकता है। जानवरों के अध्ययन में पाया गया की बी. सी. एम. –7 यह छोटी आंतों में सूजन प्रतिक्रियाओं को बनाता है। यह हार्मोनल कार्य में परिवर्तन करता हैं, साथ ही तंत्रिका और प्रतिरक्षा प्रणाली को भी प्रभावित करता है। बी. सी. एम. –7 मस्तिष्क में ढून्ढ, सोचने की शक्ति और सोने के साथ समस्या पैदा होने की संभावना हो जाएगी। इन तंत्रिका संबंधी मुद्दों पर भी शिज़ोफ्रेनिया (एक प्रकार का पागलपन) और आटिज्म (आत्मकेंद्रित के साथ चिंताओं) में एक कारक हो सकता है। इस्कीमिक हृदय रोग बहुत से देशों में मौत का सबसे आम कारण है।

न्यूजीलैंड में एक अध्ययन में स्पष्ट रूप से पाया गया कि ए 1 दूध पीने वालो में इस्कीमिक हृदय रोग अधिक पाया गया एवं मृत्यु की उच्च दर का पता चलता है, जबकि ए 2 दूध पीने वालों में हृदय की समस्याओं और मधुमेह की समस्या का स्तर कम पाया गया। इससे पहले ए 1 और ए 2 दूध के दावों की जांच करने के लिए कोई मानव परीक्षण के परिणाम पर अध्ययन नहीं किया गया था। लेकिन 11 अगस्त, 2014 को ऑस्ट्रेलिया के कर्टिन विश्वविद्यालय के जन स्वास्थ्य के स्कूल के एसोसिएट प्रोफेसर सेबेले पाल ने क्लीनिकल न्यूट्रीशन के यूरोपीय जर्नल में एक रिपोर्ट प्रकाशित की।

भारत सरकार में वैज्ञानिक अनुसन्धान इस क्षेत्र में हो रहे हैं लेकिन मनुष्यों में होने वाले प्रभाव पर कोई अनुसन्धान नहीं हुआ है। भारत में राष्ट्रीय पशु आनुवांशिक संसाधन ब्यूरो द्वारा प्रारंभिक अध्ययन में पाया गया की भारत वर्ष में ए 1 उत्पादन करने वाली गाय की संख्या 15 प्रतिशत से अधिक नहीं है। आज संपूर्ण विश्व में जागृति आ रही है कि बाल्यावस्था में बच्चों को ए 2 मिल्क ही देना चाहिए।

विश्व बाजार में न्यूज़ीलैंड, ऑस्ट्रेलिया, जापान, अमेरिका में ए 2 दूध की कीमत ए1 दूध से अधिक है। ए 2 दूध देने वाली गाय कि संख्या भारत में सर्वाधिक है। अतः भारत से ए 2 मिल्क के निर्यात को बढ़ावा मिलना चाहिए। यह एक बड़े आर्थिक महत्व का विषय है आज़ भारत वर्ष का डेरी उद्योग में देशी गाय के दूध के ए 2 दूध की उपयोगिता का महत्व समझ ले तो भारत डेयरी उद्योग में सबसे बड़ा ए 2 दूध उत्पादक और निर्यातक देश बन जायेगा इन सब तथ्यों को ध्यान में रखते हुए हमें इसी निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ता है कि कृषि, अर्थव्यवस्था, स्वास्थ्य रक्षा एवं धार्मिक दृष्टि से देशी गाय को संरक्षण मिलना ही चाहिए। उसके दूध को प्रमुखता मिलनी चाहिए। निकट भविष्य में ए 2 दूध का महत्व हमारे स्वास्थ के प्रति जागरूक समाज में बढ़ेगी और पशुपालकों को दूध का उचित मूल्य मिलेगा।

डॉ अरुण कुमार, सहायक आचार्य–प्रभारी,
वी.यू.टी.आर.सी.,कुम्हेर (भरतपुर) मो. : 6375664191

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–जनवरी, 2019

पशु रोग	पशु/पक्षी प्रकार	क्षेत्र
फड़किया रोग	भेड़, बकरी	जयपुर, धौलपुर, बीकानेर
एम्फीस्टोमियेसिस	गाय, भैंस	भरतपुर, उदयपुर, कोटा, धौलपुर
फेसियोलियेसिस (यकृत कृमि)	गाय, भैंस, भेड़, बकरी	भरतपुर, कोटा, धौलपुर, डूँगरपुर, हनुमानगढ़, सवाई–माधोपुर, सीकर, बूंदी
गलघोंटू	गाय, भैंस	जयपुर, चित्तौड़गढ़, पाली, टौंक, भरतपुर, उदयपुर, अलवर, भीलवाड़ा, दौसा, अजमेर
लंगड़ा बुखार	गाय, भैंस	श्रीगंगानगर, भरतपुर, हनुमानगढ़, अलवर, भरतपुर
मुँहपका–खुरपका रोग	गाय, भैंस, भेड़, बकरी	दौसा, जयपुर, अनूपगढ़, धौलपुर, बीकानेर, अलवर, अजमेर, सवाईमाधोपुर, भीलवाड़ा
बबेसियोसिस (खून मूतना)	गाय, भैंस	धौलपुर, बून्दी, डूँगरपुर, बीकानेर, कोटा
माता रोग (चेचक)	भेड़, ऊँट, बकरी	बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ, जैसलमेर, पाली, सिरोही, सीकर
पी.पी.आर.	भेड़, बकरी	नागौर, जोधपुर, बीकानेर, हनुमानगढ़, जैसलमेर, श्रीगंगानगर, चूरू, सीकर, उदयपुर, पाली, सिरोही
एनाप्लाज्मोसिस	गाय	भरतपुर, सीकर, जयपुर
न्यूमोनिक पास्चुरेल्लोसिस	गाय, भैंस	सीकर, नागौर, अलवर, झुंझुंनु, सवाईमाधोपुर
जोहन्स रोग	भेड़, गाय	बीकानेर, जैसलमेर, श्रीगंगानगर
सी.सी.पी.पी. (एक प्रकार का न्यूमोनिया)	भेड़, बकरी	बीकानेर, जैसलमेर, श्रीगंगानगर, धौलपुर, जोधपुर, अजमेर
रानीखेत रेग	मुर्गियां	अजमेर, जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, अलवर, कोटा
इन्फेक्शियस ब्रोंकाइटिस	मुर्गियां	अजमेर, जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, अलवर, कोटा

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. त्रिभुवन शर्मा, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर एवं प्रो. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर।
फोन– 0151–2204123, 2544243, 2201183

सफलता की कहानी

डेयरी व्यवसाय अपनाकर दूसरों के लिये बने प्रेरणास्त्रोत

नागौर जिले के डेह गांव के लेखराज गोरा पुत्र ओमप्रकाश गोरा ने पशुपालन को एक व्यवसाय के रूप में अपनाकर अपनी सामाजिक व आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाया है। पांच वर्ष पूर्व इन्होंने यह व्यवसाय दो भैंस व एक गाय के साथ शुरू किया। आज इनके पास 16 भैंस एवं दो गाय है, जिससे यह प्रतिदिन औसतन 100 से 120 लीटर दूध विक्रय करते हैं। पशुपालन को व्यवसाय की तरह अपनाने के लिए इन्होंने कठिन परिश्रम के साथ ही प्रशिक्षण भी प्राप्त किया। पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया, नागौर द्वारा समय–समय पर आयोजित प्रशिक्षण शिविरों एवं विचार गोष्ठी में भाग लेकर कई नवीन जानकारियां प्राप्त कर उन्हें अपने व्यवसाय में समावेशित कर, आर्थिक लाभ में बढ़ोतरी की है। प्रशिक्षण शिविर के माध्यम से कृमिनाशक दवा का उपयोग, आहार में खनिज मिश्रण का महत्व, टीकाकरण, ग्याभिन पशुओं की देखभाल, उचित दुधारू नस्ल का चयन, सूखे चारे का यूरीया उपचार, आजोला उत्पादन आदि जानकारियां प्राप्त की है। आज वह दूसरों लोगों के लिये एक मिशाल कायम कर रहे हैं जिससे गांव के अन्य लोग भी पशुपालन को व्यवसाय के रूप में अपनाने को अग्रसर हो रहे हैं। **सम्पर्क– लेखराज गोरा, गांव डेह, नागौर (मो. : 9001923973)**

प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजुवास, बीकानेर

नवजात बछड़े-बछड़ी की देखभाल अधिक दुग्ध उत्पादन के लिए जरूरी

निदेशक की कलम से...

प्रिय किसान और पशुपालक भाईयों व बहनों।

नूतन वर्ष अभिनंदन! आपके सुखी जीवन और सम्पन्नता की मंगल कामनाएं। पालतू पशुओं से दुग्ध उत्पादन बढ़ाने के संकल्प के साथ कार्य करने की जरूरत है। इसके लिए पशुपालकों को पशु ब्याहने के साथ ही पशुपोषण और नवजात के समुचित प्रबंधन पर गौर करना चाहिए। बछड़े–बछड़ियों के प्रारम्भिक जीवन में ही उनके तेजी से विकास और जल्दी परिपक्वता के लिए उचित और बेहतर पोषण दिया जाना जरूरी है। इसकी कमी रहने से पहले ब्यांत में अधिक उम्र के साथ ही पूरे जीवन काल की उत्पादकता में कमी हो जाती है। ऐसा देखा गया है कि पशुपालक दुधारू पशुओं पर उचित ध्यान देते हैं, परन्तु नवजात एवं छोटे पशुओं के प्रबंधन को महत्वपूर्ण नहीं समझते क्योंकि उनसे उन्हें कोई तात्कालिक लाभ नहीं मिलता है। उचित प्रबंधन के अभाव में 15 से 20 प्रतिशत बछड़े/बछड़ी जन्म से एक महीने की अवधि में मर जाते हैं। पशुधन का भविष्य नवजात पशु की देखभाल और प्रबंधन पर निर्भर करता है। नवजात पशु 10 से 20 मिनटों में स्वतः खड़े हो जाते हैं और दूध पीने का प्रयास करते हैं। प्रायः ये पाया गया है कि आधे घंटे के अन्दर वे खीस पीना आरम्भ कर देते हैं। यदि उनके प्रयास में कोई कठिनाई उत्पन्न हो तो तुरंत पशुपालक को उसके खड़े होने तथा खीस पीने में सहायता करनी चाहिए। दूध की अपेक्षा खीस में लगभग 5 गुणा ज्यादा प्रोटीन व 9 गुणा विटामिन ''ए'' पाया जाता है तथा खनिज तत्वों की मात्रा भी अधिक होती है। यह बेहद पाचक और स्वादिष्ट भी होता है तथा नवजात के प्रथम मल को बाहर निकालने में भी मदद देता है। अगर किसी कारणवश मां की मृत्यु हो जाए तो बच्चे को अन्य पशुओं से उपलब्ध खीस का सेवन कराना चाहिए। अगर किसी अन्य पशु से भी खीस उपलब्ध न हो सके तो कृत्रिम खीस बना लेना चाहिए। कृत्रिम खीस बनाने के लिए दो अण्डे लेकर उन्हें तोड़कर एक कटोरे में डालना चाहिए, उसके बाद एक चम्मच की सहायता से अण्डे की जर्दी व सफेदी को अच्छी तरह मथ लेने के पश्चात 30 मिली लीटर अरंडी का तेल मिलाकर पुनः मथ लेना चाहिए। इस मिश्रण में थोड़ा सा खनिज लवण मिश्रण व विटामिन अंश मिलाकर नवजात पशु के शरीर भार का 1/10 भाग दूध के साथ पिलाना चाहिए। ये मिश्रण हर बार ताजा तैयार करना चाहिए। कृत्रित खीस बनाकर बच्चे को एक दिन में तीन बार 5 दिन तक अवश्य देना चाहिए। नवजात पशु को जन्म के 5 दिन बाद पूर्ण दूध पिलाना चाहिए क्योंकि ये पशु की पौष्टिक तत्वों की जरूरत को पूरा करता है। मोटे तौर पर कहा जाए तो दूध बछड़े–बछड़ी के लिए एक सम्पूर्ण आहार है। **–प्रो. अवधेश प्रताप सिंह, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर मो : 9414139188**

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी चैनलों से प्रत्येक गुरूवार को प्रसारित **''धीणे री बात्यां''** के अन्तर्गत **जनवरी, 2019** में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। राजकीय प्रसारण होने के कारण कभी कभी गुरूवार के स्थान पर इन वार्ताओं का प्रसारण अन्य उपलब्ध समय पर भी किया जा सकता है। पशुपालक भाईयों से निवेदन है कि प्रत्येक गुरूवार को प्रदेश के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों के मीडियम वेव पर सायः 5:30 से 6:00 बजे तक इन वार्ताओं को सुनकर पशुपालन में लाभ उठाएं।

क्र.सं.	वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
1	**जयप्रकाश कच्छावा** **9460062330** मेडिसन विभाग, सीवीएएस, बीकानेर	भैंसों में फासफोरस की कमी से होने वाले रोग एवं इनका उपचार	03.01.2019
2	**डॉ. वीरेन्द्र कुमार** **9784834172** पशुधन अनुसंधान केन्द्र, कोड़मदेसर	कांकरेज गायों का प्रबंधन	10.01.2019
3	**डॉ. अशोक डांगी** **7073133222** प्रभारी, आई.यू.एम.एस., राजुवास, बीकानेर	ई–शासन हेतु राजुवास के प्रयास	17.01.2019
4	**डॉ. तरूणा भाटी** **9413602455** माइक्रोबायोलोजी विभाग, सी.वी.ए.एस., बीकानेर	राजुवास में वन्यजीव, स्वास्थ्य एवं प्रबंधन केन्द्र का महत्व	24.01.2019
5	**प्रो. त्रिभुवन शर्मा** **9414264997** अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर	पशु उत्पादकता को बढ़ाकर पशुपालकों की आय में बढ़ोतरी	31.01.2019

मुस्कान !

संपादक
प्रो. अवधेश प्रताप सिंह
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
डॉ. नीरज कुमार शर्मा
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क) से.नि.
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. अवधेश प्रताप सिंह द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. अवधेश प्रताप सिंह

पशुचिकित्सा व पशु विज्ञान की जानकारी प्राप्त करने के लिए राजुवास के टोल फ्री नम्बर पर सम्पर्क करें। **1800 180 6224**